अध्याय 6

क्षेत्रीय अध्ययन
(Field Study)

परिचय

पृथ्वी तल पर दो प्रकार की प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक भू–दृश्यावलियॉ दिखाई देती है। जिसका स्वरूप निरन्तर परिवर्तित होता रहता है। भौगोलिक तत्वों के बारे में क्षेत्रीय अध्ययन करने की शुरूआत प्राचीनकाल से हो गयी थी।

भूगोल एक क्षेत्र विज्ञान है और क्षेत्र अध्ययन मनुष्य तथा उसके पर्यावरण के बीच जटिल संबंधों की जानकारी प्राप्त करने में हमारी सहायता करता है। प्रारम्भ से ही भूगोलवेत्ताओं ने पृथ्वी के विभिन्न भागों के प्राकृतिक तथा सांस्कृतिक पर्यावरण की जानकारी स्वयं के द्वारा क्षेत्रीय अध्ययन से प्राप्त की है। भूगोल का सही अध्ययन क्षेत्र विशेष में जाकर ही प्राप्त किया जा सकता है। जैसा कि कहा जाता है – यदि हम पुस्तकों को पढ़ते है तो हम जल्दी ही भूल जाते है।यदि हम किसी वस्तु को वास्तविक रूप में देखते है तो वह हमें याद रहती है। परन्तु यदि हम किसी काम को स्वयं करते है तो हमें उसकी सही समझ आती है।

भूगोल के संकल्पनात्मक इतिहास के अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि क्षेत्रीय अध्ययन ही भूगोल की मूल संकल्पना को विकसित करने में सहायक रहा है। प्राचीनकाल से लेकर आधुनिक काल तक विश्व के विभिन्न क्षेत्रों का परिभ्रमण करके क्षेत्रीय वर्णन के द्वारा अनेकों वैज्ञानिकों, नाविकों आदि ने क्षेत्रीय अध्ययन की परम्परा को समृद्वकिया है। यूनानी भूगोलवेत्ता एवं मानचित्राकार टॉलमी का ज्याग्राफिया (Geographical) नामक ग्रन्थ क्षेत्रीय अध्ययनप का ही परिणाम है। डच मानचित्रकार मर्केटर ने तो क्षेत्रीय अध्ययन के आधार पर ही यूरोप का विस्तृत मानचित्र प्रस्तुत किया। इसी तरह 19 वीं शताब्दी में जर्मनी के भूगोलवेत्ताओं में रिटर, रिचथोपेन और अमेरिकन भूगोलवेत्ताओं में डेविस, हटन आदि ने क्षेत्रीय अध्ययन के वर्णनों द्वारा भूगोल के ज्ञान में संवद्धि की।

भारत में तो क्षेत्रीय अध्ययन की परम्परा अत्यन्त प्राचीन काल से ही विद्यमान रही है। प्राचीन काल में वेदों और विभिन्न महाकाव्यों में विभिन्न प्रदेशों का यथार्थपरक विश्लेषण वास्तव में गहन क्षेत्रीय अध्ययन के परिणाम है। इनमें केवल देश का ही नहीं अपितु अनेकों महाद्वीपों का वर्णन आज भी आश्चर्य जैसे– लगते है। क्योंकि तत्कालीन समय में आधुनिक काल की तरह सुविधाएं उपलब्ध नहीं थी। फिर भी विभिन्न ऋषियों, मुनियों एवं कवियों का क्षेत्रीय विश्लेषण, आधुनिक काल के क्षेत्रीय वर्णनों से कहीं कम नहीं है।

हम क्षेत्रीय अध्ययन के द्वारा ही विभिन्न स्थानों की अवस्थिति, विस्तार, संरचना और उनके क्रियात्मक अन्तर्सम्बन्धों की जानकारी प्राप्त कर सकते है। क्षेत्र विशेष में जाने पर ही विभिन्न भौतिक एवं सांस्कृतिक तथ्यों के बारे में यथार्थ जानकारी मिल सकती है। उदाहरणार्थ किसी ग्रामीण क्षेत्र में जाकर गांव की स्थिति, उसका आकार और क्षेत्रीय अन्तर्सम्बन्धों की भौगोलिक व्याख्या की जा सकती है। जैसे थार के मरूस्थल में ग्रामों की स्थिति, आकार, अवस्थिति, क्षेत्रीय अन्तर्सम्बन्ध भौतिक कारकों के साथ–साथ सामाजिक, सांस्कृतिक विशेषकर जातिगत संरचना पर आधारित है। क्षेत्रीय अध्ययन में इसका सूक्ष्म सर्वेक्षण, भौतिक सत्यापन करके इनके बारें में सामाव्यीकरण और संकल्पनाएं विकसित की जा सकती है। इसी तरह भू–उपयोग के अन्तर्गत ग्रामीण बसाव, केन्द्र से दूरी के आधार पर फसलों का वितरण, मिट्टी का प्रतिरूप पर्यावरण अन्तर्सम्बन्ध का अध्ययन अनेक संकल्पनाओं के निर्माण और परीक्षण की प्रयोगशाला के रूप में कार्य करता है।

भूगोल के विद्यार्थी को क्षेत्रीय अध्ययन की संकल्पना और क्रिया विधि को भली–भांति जानना आवश्यक है। प्रारम्भिक स्तर पर भौगोलिक तथ्यों की पारस्परिक जटिलताओं का अनुमान और भौगोलिक विश्लेषण एवं मानचित्रण के विषय में विद्यार्थी स्वयं सक्षम हो सकता है।

क्षेत्रीय अध्ययन की क्रियाविधि (Precedure for Field Study)

क्षेत्रीय अध्ययन की क्रियाविधि शोध–प्रतिरूप से संबंधित यह कई चरणों में सम्पन्न की जाती है। इसका सूत्रपात भौगोलिक समस्या से होता है। जिसके लिए कतिपय संकल्पनाओं का निर्माण किया जाता है। इन संकल्पनाओं के परीक्षण हेतु उपयुक्त शोध प्रतिरूप तैयार किया जाता है। क्रियाविधि को रेखा चित्र में प्रस्तुत किश गया है।

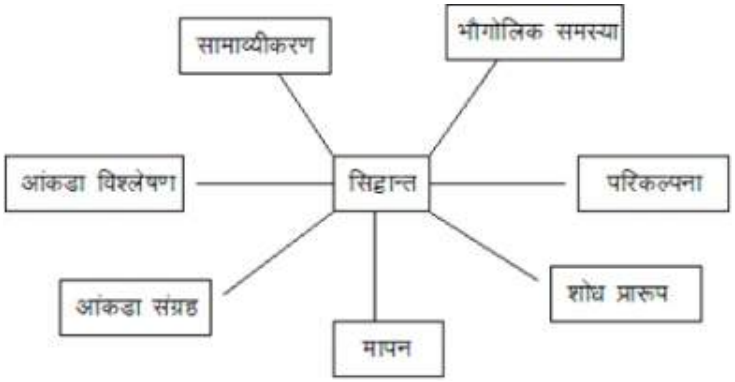

क्षेत्रीय अध्ययन का उद्देश्य और अध्ययन प्रतिवेदन

क्षेत्रीय अध्ययन की संकल्पना के अनुसार ही भूगोल में इसका महत्व एवं उद्देश्य निर्विवाद है। वास्तव में भूगोल का विद्यार्थी जो कुछ भी उपलब्ध मानचित्रों एवं पुस्तकों में पढ़ता है वह क्षेत्रीय अध्ययन द्वारा और अधिक संतुष्ट हो सकता है। इसलिए क्षेत्रीय अध्ययन भौगोलिक तथ्यों की यथार्थता जानने के लिए एक प्रयोगशाला का कार्य करता है।

क्षेत्रीय अध्ययन हेतु आंकडो के संग्रहण, वर्गीकरण विश्लेषण एवं मानचित्रण करने की आवश्यकता होती है। इसे अध्ययनकर्त्ता क्षेत्रीय अध्ययन के दौरान संकलित तथ्यों, चट्टानों खनिजों एवं मृदाओं के नमूनों के प्रयोगशाला में उपलब्ध निष्कर्षो के दौरान निर्मित मानचित्रों तथा रेखाचित्रों और संग्रही आंकडों के आधार पर तैयार करता है। इस प्रकार के प्रतिवेदन के लेखन में पुस्तकों, पूर्ववर्ती लेखकों द्वारा तैयार किये गये प्रतिवेदनों से मदद ली जा सकती है। क्षेत्र अध्ययन को बोधगम्य बनाने के लिए इसमें मानचित्रों एवं मौसम संबंधी आंकडों का उपयोग किया जा सकता है। इसी प्रकार आवागमन एवं संचार के साधनों, अधिवासों आदि को स्थलाकृतिक मानचित्र की सहायता से बनाया जा सकता है।

उपर्युक्त निर्देशों के आधार पर क्षेत्रीय अध्ययन प्रतिवेदन निम्न शीर्षकों के अंतर्गत तैयार करेगें –

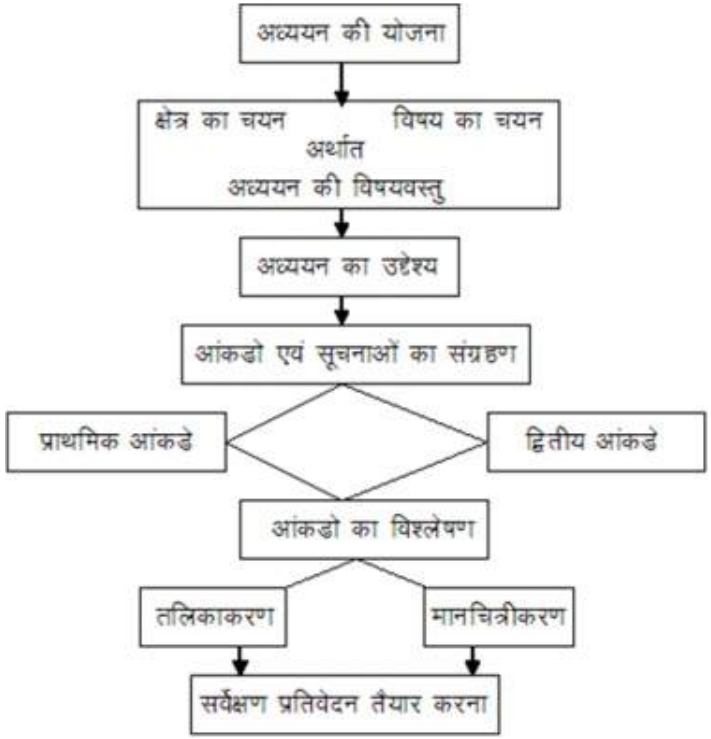

1. क्षेत्र की अवस्थिति
2. क्षेत्र की भौतिक विशेषताएं (उच्चावच)
3. अपवाह तन्त्र
4. जलवायु
5. मृदा
6. खनिज
7. वनस्पति
8. पशु–सम्पदा
9. कृषि एवं भूमि उपयोग
10. उद्योग–धन्धे
11. व्यापार एवं वाणिज्य
12. यातायात एवं संचार के साधन
13. अधिवास

14. जनसंख्या
15. ग्रामीण विकास की नवीन योजनाएं

(1) क्षेत्र की अवस्थिति – भौगोलिक अध्ययन में किसी स्थान की स्थिति एवं अवस्थिति का ज्ञान आवश्यक और प्राथमिक पहलू है। अक्षांश व देशान्तर के संदर्भ में स्थिति का निर्धारण किया जाना चाहिए। अवस्थिति का निर्धारण देश, प्रदेश तथा निकटवर्ती क्षेत्र के संदर्भ में किया जाता है। इस शीर्षक के अन्तर्गत निम्न सूचनायें एकत्रित करते हैं। क्षेत्र की अक्षांशीय व देशान्तिक स्थिति। वहाँ प्रशासनिक स्थिति आस–पास के क्षेत्र, आवागमन के साधन, निकटवर्ती क्षेत्रों से दूरी व सम्पर्क सुविधा के आधार पर मानचित्र में अध्ययन क्षेत्र की स्थिति का निर्धारण करना चाहिए। उक्त जानकारियॉ स्थलाकृतिक पत्रक व स्थानीय निवासियों से प्राप्त की जा सकती है।

(2) भौगोलिक विशेषतायें (उच्चावच) – प्रत्येक स्थान के भौगोलिक व्यक्तित्व के निर्धारण में उच्चावच व स्थलाकृतियों का महत्वपूर्ण योगदान है। उच्चावच का जलवायु, अपवाह, वनस्पति, कृषि, आर्थिक विकास व सामाजिक जीवन पर गहरा प्रभाव पडता है। धरातल, समतल व मैदानी होने पर कृषि कार्य अधिक विकसित होते है। पर्वतीय या उबड़–खाबड़ क्षेत्रों में कृषि के विकास की सम्भावना अपेक्षाकृत कम होती है। समतल क्षेत्रों में जल निकास की समस्या हो सकती है। क्योंकि जल निकास के लिए ढाल की आवश्यकता होती है। इस प्रकार से क्षेत्रीय अध्ययन से वहाँ की समस्याओं व निराकरण के उपाय तलाश किये जा सकते है।

(3) अपवाह तंत्र – किसी भी क्षेत्र में धरातलीय स्वरूप, संरचना एवं वर्षा की मात्रा पर जल की उपलब्धि निर्भर करती है। तीव्र ढाल तथा कठोर शैले होने पर वर्षा की प्रचुरता के बाद वहाँ भूमिगत जल भण्डार न्यून होने की सम्भावना रहती है। क्योंकि कठोर शैलों के कारण उनमें जल प्रवेश नहीं कर पाता एवं वर्षा का अधिकांश जल बहकर चला जाता है। चयनित क्षेत्र में जल स्त्रोतों का अध्ययन करना भी आवश्यक है। ये स्त्रोत झील, तालाब, साधारण कुऍ, नलकूप आदि के रूप में हो सकते है। चयनित क्षेत्र में जल का अभाव की समस्या व निवारण हेतु उपाय संबंधी जानकारी दी जा सकती है।

(4) जलवायु – किसी भी क्षेत्र की जलवायु का, उस क्षेत्र को समझने में काफी योगदान रहता है। इसके अन्तर्गत तापमान, वायुदाब, पवनों की दिशा, वर्षा आदि के द्वारा उस क्षेत्र को समझने में काफी योगदान मिलता है। जलवायु उस क्षेत्र की कृषि, मानवजीवन क्रियाकलाप, रीति–रिवाज, वेशभूषा, भोजन की आदतें आदि को प्रभावित करता है। अतः जलवायु की जानकारी क्षेत्रीय अध्ययन के लिए अति आवश्यक है।

(5) मृदा – प्रत्येक क्षेत्र में कृषि–संपन्नता वहाँ की मिट्टियों की संरचना, रंग, बनावट, उपजाऊपन आदि कारकों पर निर्भर करती है। इसलिए छात्रों को चयनित क्षेत्र में जाकर वहाँ की मिट्टियों के बारे में किसानों से जानकारी प्राप्त करें, मिट्टी संबंधी समस्याओं के बारे में भी जानकारी प्राप्त करनी चाहिए। मृदा अपरदन, प्रदूषण, अनुपजाऊ, मृदा क्षरण आदि समस्याओं की जानकारी प्राप्त कर समस्याओं के निवारण हेतु सुझाव देने का प्रयास करना चाहिए।

(6) खनिज – अध्ययन क्षेत्र में कोई न कोई खनिज निश्चित रूप से जमीन से निकाला जाता होगा। वहाँ के व्यक्तियों से इस बारे में जानकारी प्राप्त करें। उपलब्ध खनिज भण्डार, स्थानीय खपत, निर्यात, खनन से सम्बन्धित समस्याऐं आदि की जानकारी प्राप्त कर, भविष्य में खनिज का दोहन किस प्रकार से करना चाहिए, जानकारी दें।

(7) वनस्पति – जलवायु व मिट्टी स्थाकृति वनस्पति को प्रभावित करती है। प्राकृतिक वनस्पति की सघनता, विशेषता, प्रकार, गुण आदि की जानकारी प्राप्त करके प्राकृतिक वनस्पति का वर्तमान जीवन शैली पर कितना प्रभाव पड़ रहा है व भविष्य के संदर्भ में वनस्पति के महत्व को रेखांकित करना। वनों की कटाई, मृदा अपरदन, भूमिगत जल स्तर का गिरना, यह सब समस्यायें प्राकृतिक वनस्पति के अन्धाधुन्ध दोहन से ही हो रही है। अतः वृक्षारोपण के महत्व पर क्षेत्रीय अध्ययन में प्रकाश डालना उपयोगी होगा।

(8) पशु सम्पदा – भारत में पशुपालन, मांस, चमड़ा, जैविक खाद, दूध, ऊन कृषि कार्य आदि के लिए किया जाता है। किसानों के लिए यह कृषि कार्य के साथ–साथ जीवन यापन का सहायक व्यवसाय है। पशु सम्पदा की दृष्टि से विश्व में भारत का प्रथम स्थान है। लेकिन उनसे उत्पादकता अन्य देशों की तुलना में न्यून है। अतः पशुओं की उपलब्धता, नस्ल सुधार, पशु चिकित्सालय, पशुचारण, जैविक खाद आदि के बारे में रिपोर्ट में सुझाव देना चाहिए।

(9) कृषि एवं भूमि उपयोग – भारत कृषि प्रधान देश है। अतः भारत को कोई गाँव ऐसा नहीं जो कृषि से जुडा हुआ न हो। अतः क्षेत्रीय अध्ययन में कृषि सम्बन्धी जानकारी प्राप्त करना अति आवश्यक है। प्रमुख कृषि उपजें, खरीफ व रबी की फसलें, फसलों का क्रम, उत्पादकता, बाजार, बीज व खाद आदि की उपलब्धता व कृषि आधारित उद्योगों की जानकारी प्राप्त कर भविष्य में कृषि उत्थान के उपाय के बारे में जानकारी देना।

(10) उद्योग धन्धें – अध्ययन क्षेत्र में कृषि के अतिरिक्त अन्य व्यवसाय भी हो सकते है। ग्रामीण क्षेत्रों में आज भी कुटीर उद्योग प्रचलित है। वहाँ के निवासियों द्वारा अपने जीवनयापन के लिए जो भी व्यवसाय किए जाते है, उनकी रिपोर्ट में सम्मिलित करना चाहिए।

(11) व्यापार एवं वाणिज्य – व्यापार व वाणिज्य का यातायात के साधन व क्षेत्रीय विकास का अटूट संबंध है। यदि क्षेत्र विकसित है तो वहाँ व्यापार व वाणिज्य में तेज गति से हलचल नजर आयेगी। स्थानीय व्यक्तियों से जानकारी प्राप्त कर, अपने प्रतिवेदन में सुझाव लिखने चाहिए।

(12) यातायात एवं संचार के साधन – क्षेत्र का आर्थिक विकास आवागमन से साधनों व संचार के साधनों पर निर्भर करता है। जहाँ क्षेत्रीय अध्ययन करने के लिए गए वहाँ से कौन–कौनसे राजमार्ग व राष्ट्र मार्ग गुजर रहे है। क्या वहाँ रेल मार्ग की सुविधा

है?इन सब बातों का उल्लेख करते हुए क्षेत्र का विकास व विकास न होने के कारण के बारे में सुझाव दिये जा सकते है।

(13) जनसख्या एवं अधिवास – किसी भी स्थान के विकास में वहाँ की जनसंख्या का महत्वपूर्ण योगदान होता है। वहाँ की जनसंख्या संसाधनों को प्रभावित करती है। साक्षरता का अनुपात वहाँ की जागरूकता का परिचायक होता है। लिंग अनुपात वहाँ की व्यावसायिक संरचना को प्रभावित करता है। अतः जनसंख्या संबंधी आंकडे एकत्रित कर, क्षेत्र विकास के लिए सुझाव देना चाहिए।

(14) ग्रामीण विकास की नवीन योजनाएं – सम्पूर्ण क्षेत्र की जानकारी प्राप्त कर, क्षेत्रीय अध्ययन में उस क्षेत्र के विकास हेतु अपने सुझाव लिखने चाहिए ताकि वह क्षेत्र भविष्य में एक विकसित क्षेत्र के रूप में पहचान बना सके। इस प्रकार से सभी समस्याओं को सूचीबद्ध करके, प्रतिवेदन तैयार करना चाहिए।

विशेष – भूगोल शिक्षक उपयुक्त विषय एवं क्षेत्र का चुनाव कर क्षेत्रीय अध्ययन करायें। जिसमें प्रत्येक विद्यार्थी अनिवार्य रूप से भाग लें। कक्षा में विद्यार्थियों की संख्या के आधार पर चार–पॉच विद्यार्थियों को समूह में प्रश्नावली बनाकर प्राथमिक आंकडे एकत्रित करने के लिए कहें। सामान्य सूचनाएं सामूहिक रूप से एकत्रित करें। सर्वेक्षण पूर्ण होने पर इसका प्रतिवेदन तैयार कराये जो कम से कम 10 पृष्ठों में होना चाहिए। ताकि प्रायोगिक परीक्षा के समय इसका मूल्यांकन किया जा सकें।

अभ्यास प्रश्न

1. क्षेत्रीय अध्ययन को संक्षिप्त में समझाइये।
.....
.....
.....
.....

2. क्षेत्रीय अध्ययन भूगोल के विद्यार्थियों के लिए क्यों आवश्यक है?
.....
.....
.....
.....

3. क्षेत्रीय अध्ययन का चार्ट बनाइए।
.....
.....
.....
.....

4. क्षेत्रीय अध्ययन के पीछे क्या उद्देश्य छिपा हुआ है?
.....
.....
.....
.....

5. क्षेत्रीय प्रतिवेदन किसे कहते है?
.....
.....
.....
.....

6. क्षेत्रीय प्रतिवेदन के सोपान बताइये।
.....
.....

.....

.....

प्रश्नावली प्रारूप

मुखिया का नाम : ————————————————————

पिता का नाम : :

————————————————————

उम्र : ————————————————————

शिक्षा : ————————————————————

व्यवसाय : ————————————————————

वार्षिक आय : ————————————————————

परिवार के सदस्यों की संख्या ——— पुरूष ——— स्त्री ——— कुल

आवास का प्रकार : ————————————————————

आवास में सुविधाए : पेयजल / विद्युत / दूरभाष / शोचालय / रसोई

कृषि भूमि : ————————————————————

सिंचाई के साधन : ————————————————————

परिवहन सुविधा : ————————————————————

डाकघर : ————————————————————

सड़क : ————————————————————

चिकित्सा सुविधा : ————————————————————

अन्य सुविधाएं : ————————————————————

धरातल : ————————————————————

नदिया / झीलें / तालाब ————————————————————

खनिज की जानकारी: ————————————————————

गांव का इतिहास : ————————————————————

समस्याएं एवं भावी विकास के सुझाव